संगठन की शक्ति

यह एक **New Moral Stories in Hindi Matter** है। इसमें बहुत ही अच्छी **हिंदी कहानी** दी गयी है। आप यह **शिक्षा की कहानी** जरूर पढ़ें। एक वन में एक बहुत ही बड़ा और क्रूर **अजगर** था. वह जब भी बिल से निकलता तो सारे जानवर डरकर भागने लगते. एक बार अजगर **शिकार** की तलाश में था.

अगल बगल के सारे जानवर भाग निकले थे. वह गुस्से से लाल हो गया और फुफकार मारने लगा और इधर उधर आहार की खोज करने लगा. वही नजदीक में एक हिरणी अपने नवजात बच्चों को पत्तियों के ढेर के नीचे छिपाकर भोजन की तलाश में गयी थी.

अजगर की तेज फुफकार से पत्तियां उड़ने लगी और हिरणी के बच्चे दिख गए. इतना भयानक जानवर देख हिरणी के बच्चे सहम गए और देखते ही देखते अजगर उन्हें निगल गया.

तब तक हिरणी भी आ गयी थी. वह बेचारी असहाय कर भी क्या सकती थी. उसे बड़ा ही दुःख हुआ. उसी जंगल में उसकी दोस्ती एक नेवले से थी. उसने नेवले को अपनी दुखभरी कहानी सुनाई.

इस पर वह बोला, " बहन मेरा बस चलता तो अभी उस दुष्ट अजगर को मार डालता. लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ. वह तो मुझे एक झटके में मार देगा. लेकिन वहीँ पास में चीटियों की एक बाम्बी है. वहाँ की रानी चींटी मेरी मित्र है. मैं उससे बात करता हूँ. शायद वह कुछ करे."

हिरणी निराश होकर बोली" तुम तो इतने बड़े जानवर होकर उसका कुछ नहीं कर सकते तो चींटी भला क्या कर पाएगी." इस पर नेवला बोला ऐसी बात नहीं है.

चींटी के पास बहुत ही बड़ी सेना है और **संगठन** में बड़ी शक्ति होती है. नेवले की बात से हिरणी को आशा नजर आई. दोनों चींटी के पास पहुंचे और सारी कहानी बताई.

चींटी से कुछ देर सोचा और बोली, " ठीक है. हम तुम्हारी सहायता करेंगे. उस दुष्ट अजगार को सजा मिलनी ही चाहिए. चींटी ने कहा हमारी बांबी के पास एक संकरीला नुकीला रास्ता है.तुम किसी तरह अजगर को उस रास्ते पर आने को मजबूर करो. बाकी काम हम कर लेंगे" नवाले को चींटी पर पूरा विश्वास था. वह तैयार हो गया.

अगले नेवला अजगर की बिल के पास और उसे बोली बोलकर उकसाने लगा. क्रोध में अंधा अजगर बिल से निकला. नेवला प्लान के मुताबिक़ उसी संकरे रास्ते की दिशा में दौड़ पड़ा.

अजगर भी पीछे चल पड़ा. अजगर जब रुकता तो नेवला उसे और गुस्सा दिलाता और क्रोध में अंधा अजगर फिर से उसे दौड़ाने लगता.इसी तरह नेवला उसे संकरे रास्ते पर आने को मजबूर कर दिया.

संकरे रास्ते से गुजरते ही अजगर की देह छिलने लगी. जब वह उस रास्ते से बाहर निकला तो उसका बदन्न काफी छिल गया था और काफी खून निकल रहा था.

तभी चींटियों की सेना ने अजगर पर हमला कर दिया. चींटियाँ उसके शारीर के नंगे मांस को काटने लगी. अजगर तड़प उठा. वह अपने शरीर को पटकने लगा और इससे उसे और भी घाव होने लगे और चींटियों ने हमला तेज कर दिया. कुछ ही देर में अजगर तड़प - तड़पकर पर गया.

खान-पान का असर

एक राज्य एक बूढी गरीब महिला रहती थी। वह भीख मांगकर अपना गुजारा करती थी। एक नगर में वह एक महिला के घर रोजाना भिक्षा माँगने जाती थी।

वह महिला बहुत ही नेकदिल थी और रोज ही उस गरीब महिला को भिक्षा दे देती थी। इससे उसे बहुत ही संतोष होता था। एक दिन भिखारिन उस गृहणी के घर से जैसे चावल लेकर मुड़ी, गली में उस गृहणी का ढाई वर्षीय बालक खेलता दिखाई दिया। उसने एक सोने की चैन पहन रखी थी।

भिखारिन की नियत बदल गई। उसने इधर - उधर देखा कोई नज़र नहीं आया। बुढ़िया ने उस लडके के गले में से चैन ले ली और तुरंत ही वहाँ से भाग निकली।

उस सोने के चैन को लेते ही वह तुरंत भागकर अपने घर पहुंची और सोचने लगी कि इस चैन को बेचकर कुछ पैसे पाउंगी और मेरी गरीबी कुछ कम होगी।

यह सोचकर उस बूढी भिखारिन ने चैन को छुपा दिया और भोजन करके प्रसन्नता से सो गयी। सुबह भिखारिन उठी और **नित्यकर्म** से होने के बाद उसे चैन का ख्याल आया।

उसे महसूस हुआ कि उसके मन में अचानक से **परिवर्तन** आ चुका था। उसे बड़ी ही ग्लानि हो रही थी। उसने सोचा, " मैंने यह कितना बड़ा अनर्थ कर दिया। जहां से मेरा **जीवन - यापन** होता था, मेरी आजीविका चलती थी, वहाँ से मैंने चैन चुरा लिया। यह तो घोर पाप हो गया है। मुझे उस महिला से क्षमा मांगनी ही होगी। "

वह तुरंत ही भागकर उस महिला के घर पहुंची। वह महिला द्वार पर ही खड़ी थी। बूढी भिखारिन ने कहा, " मुझसे बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है। मैंने कल एक घोर पाप कर दिया। आप यह स्वर्ण चैन ले लो।

चैन को देखते ही गृहणी के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने भिखारिन से पूछा, " यह चैन तुम्हे कहाँ मिली ? " इसपर भिखारिन ने कहा, " मुझे क्षमा करें। मेरी मति मारी गयी थी। मैंने ही इस बच्चे के गले से यह चैन निकाल ली थी। मुझे माफ़ कर दें। "

इसपर बूढी भिखारिन ने कहा, " नहीं, यह पाप मैंने ही किया है। मैंने ही भरोसा तोड़ा है। मैंने ही इस चैन की चोरी की है। परन्तु सुबह मुझे अपराध बोध हुआ तो मैंने इसे वापस लाना ही उचित समझा। "

गृहणी बड़े ही आश्चर्य में पड़ गयी। भिखारिन ने फिर से गृहणी ने कहा, " मुझे खुद पर विश्वास नहीं हो रहा है कि मैंने ऐसा कैसे किया। इसके पहले तो मेरे मन में ऐसा कभी भी विचार नहीं आया। क्या आप बता सकती हैं यह चावल जो आपने मुझे दिया था वह कहा से ले आयी थी ? "

इसपर गृहणी ने अपने पति से इस बारे में पूछा तो उसने बताया, " मैंने यह चावल नाले के पास से लाया था। वह बहुत सस्ते में बेच रहा था। बाद में पता चला कि वह चावल चोरी का था और **पुलिस** ने उसे गिरफ्तार कर लिया। "

यह सुनते ही बूढी भिखारिन ने कहा, " निश्चय ही उस चोरी के अन्न से मेरी बुद्धि भ्रस्ट हो गयी और मैंने यह महापाप किया। " इसपर गृहणी के पति ने कहा, " निश्चय ही अवगुण रुपी अन्न का सीधा असर हमारे मन पर होता है। हमें वह अन्न फेंक ही देना चाहिए। " इसके बाद उन्होंने अन्न का परित्याग कर दिया।